मनुष्य बनो

जनवरी
१९९०

शरणागति

शुभ संकल्प

क्षमा,

प्रेम,

निष्काम कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

संरक्षक
दयाल फकीर चन्दजी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार, सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायेगा।

४—किसी धर्म पन्थ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ-साफ अवश्य लिखना चाहिए। उत्तर के लिये जवाबीकार्ड आना चाहिए वी० पी०पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायेगी। इसका वार्षिक मूल्य २०.०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुंचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर न मिले व अगला अंक निकलने के एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजनी चाहिए। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ-साफ लिखना चाहिए। और पते की तबदीली भी।

—प्रकाशक

R. S.

ओ३म पूर्णमद पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमदुच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष ३६	जनवरी १९९०	अङ्क ४

शब्द

"मैं हूँ सन्त चरण अभिलाषी"

नहीं भक्ति नहीं ज्ञान का भूखा, नहीं कर्म का भाषी···मैं
ढूंढ रहा अपने अन्दर नहीं मथुरा नहीं काशी···मैं
चरण धूल पाऊं सन्तन की, मिट जाये चौरासी···मैं
चलते फिरते सन्त हैं तीरथ, मरे नहीं अविनाशी···मैं
उत्तम भाग्य दर्शन सन्तन के, जन्म जन्म मल नासी···मैं
सन्त दृष्टि जब पड़े किसी पर, कटे कर्म की फाँसी···मैं
सन्त प्यार करें जिस जन से, दुनियाँ उसकी दासी···मैं
सन्त वचन काटें भ्रम जाला, हृदय जोत प्रकाशी···मैं
काल गर्भ का कटा अन्धेरा, सन्त हैं पूरणमासी···मैं
संत वचन कभी जाये न खाली, 'गाफिल' दुविधा नासी···मैं

नव वर्ष मंगलमय हो

'मनुष्य बनो' परिवार अपने सभी पाठकगणों को नव वर्ष की शुभकामनायें प्रेषित करते हुए उनके उज्जवल भविष्य व सुख समृद्धि की मंगल कामना करता है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि नव वर्ष सभी के लिये आनन्द व उल्लास का वर्ष हो।

—व्यवस्थापक

महत्वपूर्ण सूचना

परम सन्त सद्गुरु हुजूर मानव दयाल डा० आई० सी० शर्मा जी महाराज का आन्ध्र प्रदेश का बसन्त सत्संग दौरा प्रोग्राम :—

३०-१-९०	हनमकुण्डा को प्रस्थान ए. पी. एक्सप्रेस द्वारा
३१-१-९०	सत्संग—राधास्वामी सत्संग केन्द्र हनमकुण्डा
१-२-९०	,, ,, ,,
२-२-९०	सत्संग करीम नगर
३-२-९०	हैदराबाद को प्रस्थान सत्संग - सायंकाल हैदराबाद
४-२९०	सत्संग—सायंकाल हैदराबाद
५-२-९०	सत्संग—प्रातः व सायंकाल हैदराबाद
६-२-९०	सत्संग प्रातः, सायंकाल प्रस्थान— निजामाबाद के लिये
७-२-९०	सत्संग—प्रातःकाल निजामाबाद सत्संग सायंकाल आरमूर
८-२-९०	अहेरी के लिये प्रस्थान
९-२-९०	सत्संग—प्रातः व सायंकाल अहेरी
१०-२-९०	सत्संग प्रातः, सायकाल नागपुर के लिये प्रस्थान ।
११-१२-२-९०	सत्संग श्री आर डी. कोठारी, ८२, केनाल रोड, रामदास पेठ, नागपुर

१४, १५, १६ फरवरी १९९०	सत्संग प्रातः व सायं	एटावा (तराना के पास)
१६ फरवरी १९९०	संध्या प्रस्थान	इटारसी के लिये
१७, १८ फरवरी, १९९०	सत्संग प्रातः व सायं	स. चरनजीत सिंह, इटारसी, श्री सुन्दर दास जी, इटारसी
१९-२-९०	प्रस्थान	इलाहाबाद के लिये
२०-२-९०	सत्संग	श्री सुमित्र कुमार गौरी भवन 397/13C/2A मीरापुर इलाहाबाद (उ० प्र०)
२१, २२ २३ फरवरी, ९०	सत्संग प्रातः व सायं	राधास्वामी धाम, ज्ञानपुर रोड, (उ० प्र०)
२३ फरवरी, १९९०	सत्संग सायं	श्री राधे रमण जी 9, विवेकानन्द नगर संस्कृत विश्वविद्यालय के पास वाराणली (उ. प्र.)
२४ फरवरी १९९०	सत्संग	आचार्य श्री कृष्ण मोहन तिवारी 367, मोती नगर, लखनऊ
२५ फरवरी १९९०	प्रस्थान	होशियारपुर के लिये

सत्संगों की विशेष जानकारी के लिये निम्न पते पर सम्पर्क करें :—

श्री रूप चन्द्र देवड़ा, प्रेसीडेन्ट
श्री भगवान व्यास, सेक्रेटरी
इन्टरनेशनल सोसायटी ऑफ ह्यूमनिस्टिक टीचिंग,
१५-८-४४१, फीलखाना, हैदराबाद (आं० प्र०)
टेलीफोन नं०—५५७२३५, ५५१८६१, ४५५६, ४४१४३

—जनरल सेक्रेटरी

महत्वपूर्ण सूचना

सत्संगी जन को यह जानकर हर्ष होगा कि परम पुरुष पूर्ण धनी दातादयाल महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन जी महाराज का १३० वां जन्मोत्सव इस वर्ष २३ फरवरी, १९९० ई० को राधास्वामी धाम, गोपीगंज जिला ज्ञानपुर (उ० प्र०) में बड़े धूमधाम के साथ अति विशाल रूप में मनाया जायेगा। इस शुभ अवसर पर पूर्ण धनी परम सन्त सद्गुरु मानव दयाल डा० आई० सी० शर्मा जी महाराज (आध्यात्मिक उत्तराधिकारी परम संत परम दयाल पं० फकीर चन्द्र जी महाराज) की अध्यक्षता में आयोजित सन्त सम्मेलन में सत्संग वचनामृत वर्षा होंगी। तथा मानवता मन्दिर होशियारपुर पंजाब की ओर से भण्डारा होगा।

विशेष ध्यान देने की बात यह है कि दाता दयाल जी महाराज के जन्म वर्ष १८६० में भी महाशिवरात्रि २३ फरवरी को ही थी और इस वर्ष भी महाशिवरात्रि २३ फरवरी को ही है।

इस महापुनीत शुभ आयोजन में सभी सत्संगी व मानवता प्रेमी गण सादर सप्रेम आमन्त्रित हैं।

—जनरल सेक्रेटरी

गताँक पृष्ठ ३५ से आगे

तृतीय प्रवचन

परम सन्त दयाल फकीर चन्द्र जी महाराज २८-१-६४

पिछले दो सत्संगों में मैंने अपने कर्म भोग, वश या मौज आधीन जीवन में जो समझा वह कबीर की वाणी के आधार पर बता दिया । मेरी समझ में वही आया जो इस शब्द से प्रगट है :-

मैं ना मैं ना रे मैं ना ।।
मैंना तन पिंजरे में रहकर, बोली बोले रे मैं ना ।।

जब तक मैं है तब तक तू है, मोर तोर का झगड़ा ।
मैं जब गया गया तब तू भी, अब किसका है रगड़ा ।।
सत गुरु दीनी रे सैना ।।

जो तू कहता वह अन्धा है, मैं कहता दीवाना ।
मैं मैं तू तू को जो छोड़े, वही है चतुर सयाना ।।
वह है सच्ची बैना ।।

जब मैं तब गुरू नहीं है जब गुरु है मैं नाहीं ।
प्रेम गली अति तंग है भाई, दोनों कैसे समाई ।।
दोनों रहते ना ।।

तोर मोर काया की रसरी, प्राणी फाँस फंसाने ।
तोड़ के रसरी हो गये न्यारे, फिर नहीं वह भरमाने ।।
हो गये सच्चे मैं ना ।।

बकरी मैं कह गला कटावे, मैं मैं कह मिमियावे ।
मैं ना मैं ना वचन सुनावे, बेसन, शक्कर खावे ।।
कैसी मीठी मैं ना ।।

मैं ना मैं ना मैंना बोले, बोल के रटन लगावे ।
मैं को त्याग शान्त बन जावे, सुख,आनन्द धन पावे ।।
पावे नित ही चैना ।।

मैं तू भरम विकार है मन का, मन माया का साथी ।
जो मैं कहेगा दुख से मरेगा, गह के अहं का हाथी ।।
मैं तू दोनों हैं ना ।।

सुरत की पंछी मैंना बन कर, मैं ना मैं ना कहती ।
सुन्न वृक्ष की छाल पर बैठी दुख सुख अब नहीं सहती ।।
दिन है जहाँ न रहना ।।

मैं ना मैं ना तूना तूना, यह सतगुरु की वाणी ।
वाणी सुन-सुन जो चितलावे, बने सहज निर वाणी ।।
माया फिर कभी व्यापै ना ।।

राधास्वामी शब्द सुरत की, धुन गा गा के सुनावे ।
जो गावे नित गाके सुनावे, फिर पिंजरे नहिं आवे ।।
वह बन जावे मैंना ।।

'मैं' व 'तू' का भ्रम

इस मैं मैं तू तू के झगड़े को मिटाने के लिए मैं वही बता सकता हूँ जो मैंने अनुभव किया है । जब मनुष्य अमली पहलू में अर्थात जीवन व्यवहार में आता है तो सब खो जाता है । अमली जीवन में 'मैं' को मिटाना खाला का घर नहीं है । जब तक जीवन तजुर्बे से नहीं गुजरता, ठोकरें नहीं खाता अर्थात दुनियाँ में भी और अभ्यास में भी जब तक मैं पना दूर नहीं होता । मुझे इसकी समझ बिना ठोकर खाये नहीं आई । संभव

है कोई और हो जिसने ठोकर न खाई हो और उसकी मैं चली गयी हो।

हमको मैं तू बनाने वाली है हमारी बुद्धि। दुनियां में होश आया। दुनियाँ के व्यवहार को देखा। धार्मिक ग्रन्थों की बात सुनी। कठिनाइयाँ और निर्धनता भोगी। इन बातों ने मजबूर किया कि यह माना जाय कि दुनियाँ का बनाने वाला कोई है दुनियाँ को देखता हूँ, सुनता हूँ। फिर यह कहूँ कि संसार नहीं है यह बातें ही बातें हैं। जब तक बुद्धि, कर्म और ज्ञान इंद्रियाँ हमारे साथ हैं आँखें देखती हैं, कान सुनते है, फिर कैसे कहूँ कि दुनियाँ नहीं है यदि कहूं तो दीवाना हूँ। अन्तर में अभ्यास किया जाता है। राम, कृष्ण, गुरू आदि प्रकट होते हैं। शब्द और प्रकाश होता है। फिर यह कहा जाय कि यह कुछ नहीं तो गलत है। चूंकि कबीर का अनुभव मेरे अनुभव से मिलता है इसलिये मैं उसे ठीक मानता हूँ। कोई कुछ बात कहता है तो या तो पूर्व स्थिति (Back ground) का तर्जुवा होता है या निजी स्वार्थ होता है तब कुछ कहता है। आपने ध्यान नहीं दिया मैंने दिया है। पहली शादी हुई। स्त्री ७॥ वर्ष बीमार रहकर चल बसी। गरीबी थी नौकरी की, ईंटें ढोया करता था उंगलियों से खून निकला करता। ऐसी-ऐसी कठिनाइयाँ भोगी अनुभव ने सिद्ध किया कि दुनियाँ है तो सही मगर इसमें सुख नहीं। फिर यह लालसा हुई कि अन्तर में चलो, राम मिलेंगे। ऐसी बातें भी सुनो जहाँ दुनियाँ के पीछे लगे। जब अन्तर में चले तो दर्शन हुये। वहाँ से उत्थान हुआ तो बड़ा आनन्द प्रतीत हुआ। यदि दर्शन नहीं हुये तो बे आनन्दी आ गई फिर क्या ख्याल हुआ यह कि अन्तर का राम मेरे काबू नहीं आता तो जिन्दा राम मिल जाय तो उससे प्रेम करूँ। रोता रहता

था। मेरा एक स्वप्न दाता दयाल (महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज) के चरणों में ले गया। उनसे प्रेम किया। उनको ही सब समझा। आरतियाँ की। ताज पहनाये आदि-आदि। उन्होंने कहा यदि स्थायी सुख चाहता है तो उस स्थान को चल जो इस शब्द में वर्णन किया गया है।

मेरी नजर में मोती आया है ॥

... ...

कोई कहे हल्का कोई कहे भारी.....

... ...

मैं इस पर चला। जिन-जिन चक्रों या स्थानों का वर्णन है मैंने उनके लिये १२-१२ घण्टे अभ्यास किया। मेरा कर्म भोग था या मेरी वासना को काटने को दाता दयाल (महर्षि शिव) ने सत्संग कराने का काम दिया। वह मैंने इस मार्ग के चलने वालों को वर्णन कर दिया मगर कोई जिज्ञासु मेरी तरह चलने के भ्रम में न आये। बिना गुरू की देख-रेख और हिदायत के चलने में भय है।

यदि मैं आचार्य न बनता तो मेरा भ्रम दूर न होता जीवन के अनुभवों ने सिद्ध किया है कि जितने रूप रंग अन्तर में प्रकट होते हैं वे बाह्य प्रभाव होते हैं जो हमारे मस्तक पर पड़े होते हैं। एक रात मैंने बड़ा भारी प्रकाश देखा। उसमें देखा कि स्वामी जी और दाता (महर्षि शिव) बैठे हैं। उन्होंने मुझे आवाज दी। बाहर चला आया। वहाँ भी वही दृश्य दिखायी दिया। जब आचार्य पद पर आया और लोगों के कहने पर मालूम हुआ कि उन्होंने मुझे अन्तर में देखा, किसी को दवा बताई, किसी को मरने पर ले गया, तब मुझे विश्वास हो गया

कि यह सब मनुष्य के मन का ही खेल है। जब तक मनुष्य उन दृश्यों को गैर समझे बैठा है उसकी तू खत्म नहीं होगी। जब तक वह यह न समझ ले कि वह मैं ही हूँ। यह कहना कि मैं ही ब्रह्म हूँ तो यह वेदान्त में आ जाता है। यदि तू है तो किसी किसी समय ऐसे दृश्य आते हैं जिन्हें वह नहीं चाहता मगर फिर भी आते हैं। स्वप्न देखता है स्त्री आती है ब्रह्मचर्य नष्ट कर देता है। फिर भी वह आते हैं।

इसलिये मेरी समझ में यह आया है कि इन्सान के दिमाग पर जैसे-जैसे विचार या संस्कार पड़े हैं वे फुरते हैं और तरह तरह के रूप धारण करके दिखाई देते हैं। यदि सत्संग में मनुष्य को ज्ञान हो जाय तो वह दृश्य जो साधन में या दुनियावी व्यवहार में आते हैं वह न आवें। इस ज्ञान से वह काल और माया के देश में दुख सुख से बच सकता है। उसे शान्ति मिल सकती है। यह मेरा अनुभव है जो छोड़े जा रहा हूँ।

शास्त्रकार साधु-सन्त की महिमा गाते हैं। लोग मुझे महात्मा समझते हैं, मगर आपको मेरे जीवन के बारे में क्या इल्म हो सकता है। क्या मैं चोर हूँ या डाकू हूँ जो मेरे नाम के पूर्व सन्त या परम संत का शब्द है इसी से मेरे पीछे दौड़े आते हैं अथवा दाता दयाल (महर्षि शिव) ने मेरे लिये लिखा था—

तीन ताप से जीव दुखी है, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

नाम क्या है ? राधास्वामी पन्थ में वह नाम राधास्वामी है। कोई राम का नाम देते हैं- कोई कृष्ण का। कोई कुछ और कोई कुछ मगर नाम वह है जो आध्यात्मिक गुरू बताते है कि तू कौन है। मैंने अपने नाम की समझ प्राप्त करने में उम्र गुजारी है।

मेरे चार रूप हैं- (१) देह :--पं० मस्तराम के वीर्य्य से बना उनसे यह पैदा हुआ और इसका फकीरचन्द नाम रक्खा गया।

(२) मन :--सूर्य, चन्द्रमा, तारागण आदि की किरणें पृथ्वी पर पड़ी। उनके मिलाप से भोजन की सामग्री पैदा हुई वह मैंने खाई। अब मैं सोच विचार करने को विवश हुआ। मेरे मन के पैदा करने वाले ग्रह व नक्षत्र हैं। यह सिद्ध हो गया कि मन वहाँ से बना।

(३) शब्द प्रकाश :--साधन द्वारा शब्द और प्रकाश में जाना सीखा है। अब मन को छोड़कर शब्द और प्रकाश में जाता हूँ।

(४) मेरा असली रूप :--मेरा असली रूप कहाँ से आया ?सुनो ऊपर जो ग्रह हैं जिन्हें हिन्दू शास्त्र सोहं कहते है सत पद कहते हैं उनसे आया। विज्ञान वेत्ता कहते हैं कि इस सूर्य से आगे एक और सूर्य कई करोड़ गुना बड़ा है। दुनियाँ है। उसका अंश हमारे अन्तर आत्म स्वरूप है। उसे जाननें को मुझे साधन अभ्यास करने पड़े। अब जो अनुभव किया यह बताता रहता हूँ और इन सत्संगों में बताया है। कबीर ने कहा है :—

है तिल के तिल के तिल भीतर बिरले साधू पाया है।

यह मेरे अनुभव में आया है कि मैं चेतन्य का एक बुलबुला हूँ। सन्तों ने उसे सुरत कहा है। इससे मुझे क्या मिला ? मैं यह जान गया, समझ गया, मेरे अनुभव में आ गया कि यह दुनियाँ काल और माया का खेल है। अब मैं इस खेल में फंसता नहीं।

दाता दयाल (महर्षि शिव) ने फकीर की महिमा गाई है। उनका शब्द है :—

तू फकीर है मेरे प्यारे, सुन फकीर की बानी।
साधू कहें फकीर को भाई, साधू जग सुखदानी ॥
पर उपकारी जन हितकारी, गुरु के आज्ञाकारी।
अवगुन त्यागी, गुन के ग्राही, दयाभाव चितधारी ॥
निज चित साधे मन पर बोधें जीव दोष नहिं दृष्टी।
अपने भाव में बरतें निस दिन, करें दया की दृष्टी।
मोह माया और छल चतुराई, छोड़ें मूल विकारा।
पर हित लागी सहज विरागी ज्ञान, बुद्धि भण्डारा ॥
दुःख कलेष सह अपने ऊपर, जीव का करें सुधारा।
भव दुख भंजन काम निकंदन, जम से दें छुटकारा ॥
धर कपास की गती विमल चित्त, निरस विशुद्ध कहावे।
सहें विपत्ति कठिनाई जग की, और का दोष छिपावें।
सरल स्वभाव रहें जग माहीं अपना रूप संभारें।
औरन के अवगुन नहिं देखें, दया का मरम विचारें ॥
सुख देवें दुख हरें निरन्तर, क्षमा करें अपराधा।
हँसी खुशी आनन्द परम गति, अगम अलेख अबाधा ॥
नाम फकीर धराया तूने हो फकीर अब साँचा।
जैसा नाम तो गुन भी वैसा, मन कर्म सहित सुवाचा ॥
है फकीर का नाम पियारा मैं फकीर का दासा।
तन मन धन फकीर पर वारूँ, बसूं सुसंग सुबासा ॥
कठिन काम है कठिन काम है कठिन फकीर कमाई।
जग के भव दुख नासें पल में, जब फकीर जग आई ॥
जो फकीर मोहि दर्शन देवे, अपना भाग सराहूँ।
अपने तन की जाम की जूती पग फकीर पहनाऊँ ॥

मैं नहिं राम कृष्ण का सेवक- ईश ब्रह्म नहिं जानूं।
मैं फकीर का नाम दिवाना-सबसे बढ़कर मानूँ ॥
मेरे साध हैं शब्द विवेकी-सन्त वन्श कुल शोभा।
चरन कंवल मस्तक पर धारूँ प्रेम मगन मन छोभा ॥
एक घड़ी साधू की संगत कटे मोह जम फाँसी।
मेरी नजर में साधू फकीरा सत चित आनन्द रासी ॥
जो फकीर का दर्शन पाऊं चरन सरोज पखारूँ।
आप बसूं उसकी शरनाई औरों को संग तारूँ ॥
साधु की संगत गुरू की सेवा सहजहि काम बनावे।
जिस पर साधु की दृष्टि पड़ गई फिर जग योनि न आवे
तरवर सरवर मेघ का पानी औरन को सुखकारी।
तैसे ही सुनि मेरे फकीरा साधू पर उपकारी ॥
तू फकीर बन तू फकीर बन तू फकीर बन भाई।
मैं भी तरूं फकीर चरन लग ऐ फकीर ! सुखदाई ॥
सुन ले कथा सुनाऊं तुझको प्रगटे विमल विवेका।
जीव अनेक रहें जग अन्दर पर फकीर कोई ऐका ॥

फकीर सुख के दाता कहे गये हैं। वे जगत को कैसे सुख दे सकते हैं इसका मुझे कोई हल नहीं मिला। या तो वाणी रोचक है या फकीर अपने जगत को सुखी कर सकता है। यदि सचमुच फकीर सुख का दाता है तो चाहता हूँ कि भारत का कल्याण हो। जो पास आये वह सुखी हो जाय यह सौ फीसदी सहो नहीं होता। मैंने यथा शक्ति कोशिश की है कि सच्चा फकीर बनूं। जगत का भला चाहता रहता हूँ। यही उपकार कर सकता हूँ। जो समझा है वही बताता रहता हूँ। इसके सिवाय और कुछ नहीं। मेरे पास से बीमार प्रसाद ले जाते हैं

वह राजी ठीक हो जाते हैं।

कोई जगह नहीं जहाँ सन्त या फकीर नहीं। इतने सन्त और फकीर होते हुये दुनियाँ में शान्ति क्यों नहीं? बार-बार दिल में भाव उठता है। तुझे जग कल्याण का काम दिया। तू ने क्या किया। आज मैं पढ़ रहा था राम व वशिष्ठ का संवाद जो महा रामायण में आया है.

ऐ राम! प्रकृति में मनुष्य की सबसे अधिक महिमा और प्रतिष्ठा है। और देवी देवता सब इसकी आधीनता में आ जाते हैं।

अपने आपे को समझ आपे में सारा भेद है।
भेद जब अपना नहीं जाना तो भ्रम और खेद है।।
नर में नारायण है नारायण में नर है जान ले।
भेद इनमें कुछ नहीं जा गुरु से गुरु का ज्ञान ले।।

राम प्रसन्न हुये—आप सचमुच गुरु और उस वशिष्ठ ऋषि के अवतार हैं जो आकाश में मंडलीक हो रहा हैं।

वशिष्ठ हँसे-ऐ राम! तुम सम्पूर्ण ब्रह्म के अवतार हो।

राम-मैं इसे नहीं जानता और न जानना चाहता हूँ।....

क्या यह सम्भव है कि मनुष्य ब्रह्म के जगत को अपने अधीन कर सके?

वशिष्ठ :—सृष्टि में तुम्हारा अवतार इसी मन्तव्य से हुआ है। तुम सब कुछ कर सकते हो और कर सकोगे सूर्य्य चन्द्रमा तारे और देवताओं को आशीर्वाद दो कि वह शान्ति हो जाँय और वह शान्त हो जायेंगे।

मैं रिसर्चर हूँ। मेरे जिम्मे ड्यूटी है। मैं सच्चे हृदय से चाहता हूँ कि प्राणीमात्र को शान्ति मिले। जो दुखी मेरे पास

आवे सुखी हो जाय। भारत की दशा बदल जाय। यह ठीक है कि जो मेरे (touch) संसर्ग में आये उनके बहुत से कष्ट दूर हुये मगर किनके ? उनके जिन्होंने मुझ पर विश्वास किया। कई आदमी ऐसे हैं जिनका काम नहीं बनता। अतः जिसको जो मिलता है उसके अपने कर्म और इच्छा शक्ति से मिलता है लोग मुझ गलत रूप से मान देते हैं।

दूसरे यह कि प्राणी सत्संग के दीवाने न बनें। हमारी अन्तिम मंजिल क्या है ? शब्द और प्रकाश। यही सन्त मार्ग है हजरत मुहम्मद साहब का वाक्य है कि मैं अल्लाह के नूर से बना हूँ। यहां हर एक उसके नूर से बना है यदि इन बड़े-२ धार्मिक जगत के लोगों और विद्वानों को इसका अनुभव और ज्ञान हो जाय तो जितने धार्मिक झगड़े हैं वह दूर हो जाँय और हम शान्ति से रह सकते हैं यह मेरे अनभव का निष्कर्ष है। इसलिये आवाज उठाई है कि मनुष्य बनो।

इन्दौर की घटना है कि जब एक स्त्री के मरने का समय आ गया तो उसे बाबा फकीर (यानि मैं) दिखायी दिया और कहा कि अगले शनिवार को तुझे ले जाऊँगा जब दूसरा शनिवार आया तो उसने कहा कि बाबा फकीर पालकी लेकर आ गया है मैं जा रही हूँ। राम-राम न कहकर राधास्वामी-राधास्वामी कहो और प्राण त्याग दिये। वहां से ६-७ आदमी आये और सब हाल सुनाया। मैंने कहा न कि मुझको इसका कुछ पता है, न मैं वहां उस माई को लेने गया। इससे जिस निष्कर्ष पर आया हूँ वह सार तत्व या मोती धार्मिक जगत को पेश कर रहा हूँ। हिन्दू का राम उसका अपना विश्वास श्रद्धा और मन है। इसी प्रकार जैनियों का तीर्थंकर- सिक्खों व गुरू अथवा मुसलमानों का हजरत मुहम्मद उनका श्रद्धा

विश्वास और मन है। और भी इसी प्रकार समझ लो अज्ञान के कारण हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख राधास्वामी पन्थ वाले तथा अन्य सम्प्रदाय आपस में बंट गये। आज मानव जाति गुमराही (भूल भ्रम) की खन्दक में पड़कर अक्ल खो बैठी है।

मैं यह इसलिये कह रहा हूँ कि मुझ पर जगत कल्याण की ड्यूटी है। बराबर परीक्षण कर रहा हूँ। जो परिणाम निकले वह बताता जा रहा हूँ Spiritual line की Laboratory (अध्यात्म ज्ञान की प्रयोगशाला) में जो परीक्षण किये हैं उन्हें यहाँ तक सच्चा पाया है मेरा स्वभाव हो गया है कि जो दुखी मेर पास आता है मेरा दिल मान जाता है क यह दुखी है या मक्कार है मक्कार लोग ऊपरी आँसू भर लाते हैं। सत्संग उनको लाभदायक है जिनको लगन है। मांग और पूर्ति का सवाल है पब्लिक को शान्ति की आवश्यकता(Demaud) नहीं है। जहां तक मेरा अनुभव है, इच्छाशक्ति(Will Powcr) वहां काम करती है जहाँ आवश्यकता या किसी वस्तु की मांग (Demanp) होती है।

मेरा कहना है कि इन्सानित का राज हो जाय। सूर्य की किरण को आने में समय लगता है। ख्याल को भी आने-जाने में समय चाहिए। यदि दो-डेढ़ साल तक मानवता का प्रचार नहीं होता, यदि जिन्दा रहा तो कह जाऊँगा कि मजहबों का कथन प्रोपेगंडा मात्र है रोचक है। यदि ऐसा हो जाय तो फिर ठीक है।

मान लिया कि मजहबी दुनियाँ के आदमी मुक्तिदाता है। जो मेरे कथन को पढ़ेंगे वह कह सकते हैं कि मैं उस दर्जे तक

नहीं पहुंचा। पन्थों में और सम्प्रदायों के आचार्यों के यहाँ करोड़ों रुपया धर्म खाते में जाता है। उसका क्या उपयोग होता है पता नहीं। क्या सन्तों या धार्मिक जगत के आचार्यों की यह ड्यूटी हैं कि उस रुपये से अनुचित लाभ उठायें।

जो मेरी ड्यूटी थी कर दी। तो फिर मोती क्या हैं? ऐ मानव तेरा अपना रूप प्रकाश व शब्द है। अपने रूप को जान। काल माया के चक्र से निकल। यह ख्याल की दुनियाँ है। मनोमय जगत है। अपने ख्याल को बेहतर बना। शुभ संकल्पमस्तु। आवागमन से बचने को सत्संग और साधन कर कर। बाकी रहा सवाल कि कोई आदमी अपने ख्याल और संकल्प से किसी दूसरे को या जगत का भला कर सकता हैं या नहीं? यह मैं करता हूँ। भारत हमलों से बचे। परस्पर प्रेम हो। सबको शान्ति मिले। यदि यह नहीं होता तो मैं उस दर्जे तक नहीं पहुँचा। यद्यपि मैने अपनी ओर से सच्चा बनने और साधन करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यदि मौजूदा धार्मिक जगत के पथ प्रदर्शक समझते हैं कि पुस्तकों में जो लिखा है वह ठीक है तो भारत में शान्ति ले आयें। सन्तों ने इन्सान बनकर शान्ति दी। जब कोई काम उन्होंने किया इन्सान बनकर किया।

आप लोग मेरी विचार धारा से सहमत हों तो मेरी आवाज को बड़ों तक पहुचा देना। मानवता मन्दिर होशियार-पुर में इसीलिये बनाया है कि मेरी आवाज पढ़े लिखों तक तथा उन तक जो देश का भला चाहते हैं पहुंच जाय।

मासिक सन्देश

(परम सन्त हुजूर मानव दयाल
डा० ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज)

मेरे प्रियतम सत्संगियो !

राधास्वामी,
परम दयाल जी सहाई ।

आप सबको नये वर्ष की सद्भावना देता हूँ । पिछले मासिक सन्देश में मैंने आपको सत्संग के दौरे की जल्दी में लिखी गई संक्षिप्त सूचना दी थी । उसका कारण यह था कि मैं अमेरिका से भारत में केवल सात ही सप्ताह के लिये आया था और इतना व्यस्त था कि रात को सोने के लिये केवल ३ ही घण्टे मिलते थे । मैं सत्संग देने, दौरे पर जाने. पत्रों का उत्तर देने और लिखने- पढ़ने में बहुत समय देता रहा ।

मैं आपको यह सन्देश स्काटडेल ऐरीजोना, अमेरिका से लिखकर भेज रहा हूँ । आज पहली दिसम्बर है । मैं अमेरिका में थोड़े से सत्संग देने के लिये तथा भाग्य माताजी को लेने के लिये आया हूँ । क्योंकि १८ सितम्बर १९८९ को उनकी गाल

ब्लैडर की शल्य चिकित्सा फेयरफैक्स अस्पताल अमेरिका में हुई थी और डाक्टर के परामर्श से वह हमारे छोटे लड़के प्रियदर्शी जेतली के पास आराम कर रही थी।

पिछली बार सत्संग दौरे के विषय में बताते हुए मुझे याद है कि मैंने आपको बता दिया था कि हम १७ अगस्त को श्री जाहन कर्टन के यहाँ रहे। १६ अगस्त को फाल्सचर्च के अस्पताल में एक डाक्टर ने भाग्य माता जी का मुआयना निरीक्षण किया और कहा कि उन्हें १८ सितम्बर को (लगभग एक माह के बाद) आपरेशन करना पड़ेगा।

१६ अगस्त को हम एक दिन के लिये बर्जीनियावीच गये। हमारा बर्जीनिया बीच का यह दौरा व्यक्तिगत था जज साहब आचार्य के० पी० वर्मा भी हमारे साथ थे। हम अपने उसी मकान में ठहरे, जहां परमदयाल जी महाराज आकर ठहरा करते थे। मैंने आपको पहले भी बताया था कि यह बर्जीनिया बीच वाला मकान मेरे लिये तीर्थस्थान है, क्योंकि इस मकान को हमने परमदयाल जी महाराज के १९७६ के दौरे के समय खरीदा था, जब उनके साथ डा० परसराम जी अग्रवाल भी थे इस मकान में वे काफी दिन तक रहे थे। १९७८ में भी आकर इसी मकान में रहे थे। बहुत सी ऐसी बातें हैं जो परम दयाल जी महाराज के दौरों से तथा इस मकान से सम्बन्धित है। उनके विषय में मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ

वह कमरा जिस में वह सोया करते थे और जिसमें मेरा और उनका व्यक्तिगत सत्संग होता था, अब भी आध्यात्मिक किरणों से ओत प्रोत है। मैं सम्भवतया परम दयाल जी महाराज के इस ऐतिहासिक दौरे की पूरी सूचना आपको फिर कभी दूंगा। यहाँ पर तो केवल इतना बता देना आवश्यक है

कि आचार्य श्री के० पी० वर्मा वर्जीनियाँ में हमारे अमरीकी आचार्य विलियम रोडन हाईजर के घर कुछ दिन रहे और उनके घर पर एक-दो सत्संग भी दिये। एक सत्संग आचार्य रोडन हाइजर के विश्वविद्यालय रिचमण्ड में हुआ जिसमें विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों तथा विद्यार्थियों ने भाग लिया। आचार्य वर्मा ने मेरे सत्संग देने से पूर्व मेरा परिचय देते हुये बहुत सुन्दर रूप में श्रोताओं को राधास्वामी मत और गुरू की महिमा पर बहुत ही प्रभावशाली प्रवचन दिया। लोगों ने उनके प्रभावशाली परिचय को बहुत ही पसन्द किया।

मैंने अपने सत्संग में सूरत शब्द योग' की व्याख्या करते हुए यह बताया कि यहूदी और ईसाई धर्म की प्राचीन और नई मंजिल में भी यह योग गुप्त रूप में मौजूद था। मेरी यह व्याख्या श्रोताओं को बहुत पसन्द आई। यह सत्संग एक सुन्दर विशाल सभा भवन में आयोजित किया गया। यह भवन रिचमण्ड विश्वविद्यालय के मध्य में एक झील के किनारे पर बना हुआ है। झील के चारों ओर सड़क है और छात्रों के पढ़ने के लिये कक्षाओं के कमरे बने हुये हैं। विश्व-विद्यालय का यह सौन्दर्य देखते ही बनता है। सारा विश्व-विद्यालय सैकड़ों एकड़ भूमि में स्थित है। जब हमारी कार विश्वविद्यालय के प्रांगण में प्रवेश करके झील के किनारे वाली सड़क पर पहुंची और हम चक्कर लगाते हुए उस सभा भवन की ओर बढ़ रहे थे, जहाँ मुझे प्रवचन देना था, तो झील के चारों ओर जगमगाती हुई रोशनी और सुन्दर भवन बहुत ही आकर्षित दिखाई दिये।

प्रवचन के बाद हम डा० रोडन हाईजर के घर रहे और दूसरे दिन जाहन कर्टन के घर पहुंच गये। जाहन के घर हम

२५ अगस्त तक ठहरे। इसी अवधि में मैं थोड़े समय के लिये फलोरिडा भी गया, जहाँ पर क्लियरवाटर नगर में हमारे मानवता मन्दिर को दिलोजान और धन से सहायता देने वाली श्रद्धालु और विशेष सत्संगिन श्रीमती बुश रहती है। इसी दौरे पर वह मुझे सैरासोदा नगर में श्रीमती ग्लोरिया आलब्रिटन के पास भी ले गयीं। क्लियरवाटर नगर में ठहरने के दौरान में मैं बहुत ही प्रिय सत्संगी कर्नल एलवन ऐशले तथा उनकी पत्नी श्रीमती गेल ऐशले को भी उनके घर पर मिला। वे दोनों श्रीमती रूथ बुश के घर पर भी आये। मुझ यह फिर से बताने की शायद जरूरत नहीं है कि श्री ऐशले तथा उनकी पत्नी, हमें और भारत के सत्संगियों से बहुत ही प्यार करते हैं। कर्नल ऐशले के द्वारा हम भारतीय सत्संगियों के लिये विशेष प्रकार के कानों को बन्द करने वाले प्लग लाते हैं, जिन के प्रयोग से सुन्न समाधि में बहुत सहायता मिलती है।

अगस्त और सितम्बर के महीने में पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण में अमेरिका में फैले हुये सत्संगियों के आमन्त्रण आये थे किन्तु मैं उसे पूरा न कर सका, क्योंकि अस्पताल के डाक्टरों से हर सप्ताह भेंट करनी थी जिन दिनों में डाक्टरों से परीक्षण के लिये मिलना होता था मुझे भी साथ जाना पड़ता था। डाक्टर भाग्य माताजी को कई बार इसलिये बुलाते थे,क्योंकि उन्हें आपरेशन से पूर्व कई प्रकार के परीक्षण करने पड़ते हैं।

यद्यपि हम अमेरिका में पहले २० साल तक रहे थे तथापि हमें डाक्टरों से बार-बार मिलने का अवसर नहीं मिलता था १९७१ में भाग्य माताजी का छोटा सा आपरेशन भगन्दर का लिचबर्ग वर्जीनिया में अवश्य हुआ था जिसमें कोई परेशानी

नहीं हुई थी क्योंकि यह आपरेशन बड़ा था, इसलिये डाक्टरों ने परीक्षण के लिये हमें बार-बार बुलाया। डा० वेन एल्फ्रेड एक उच्चकोटि के शल्य चिकित्सक हैं। यह बहुत ही दयालु तथा मानववादी हैं। उन्होंने एक महीना परीक्षण करने के बाद आपरेशन की तिथि तय कर दी थी। डा० एलबर्ट को सेक्रेटरी श्रीमती ट्रीना ने भी बड़े प्यार से भाग्य माताजी का मुआयना इत्यादि किया। मैं आपको इस आपरेशन के बारे में अधिक नहीं बताना चाहता।

अन्त में जब मुझे यह बताया गया कि भाग्य माताजी को आपरेशन से एक सप्ताह पूर्व डा० एलवर्ट को मिलना होगा, तो मैंने भाग्य माताजी तथा आचार्य के० पी० वर्मा को तो प्रियदर्शी के पास एटलाँटा जार्जिया में भेज दिया और मैं सत्संग के दौरे पर चला गया। यह सत्संग मिनासोटा, विस-कानसन, कैलिफोर्नियाँ, न्यू हैमशायर तथा ट्रिनाडाड में आयो-जित हुये। मैं चाहता हूँ कि इनमें से कुछ स्थानों के अनुभवों को अपने प्यार सत्संगियों के साथ बाँटू ताकि वे मानसिक दृष्टि से मेरे साथ रहें। मैं यह जानता हूं और मुझे बार-बार

आपने बताया भी है कि मेरे दौरों के अनुभवों को पढ़ते समय आप सचमुच ही ऐसा अनुभव करते हैं कि मैं आपके साथ होता हूँ। यह बात भी सत्य है कि मैं स्वयं यह चाहता हूँ कि मैं आपको उन दृश्यों की व्याख्या दूं जो मेरे अनुभव में आते हैं। उन लोगों का परिचय दूं जो मुझे मिलते हैं प्यार करते और भारतीय सत्संगी भाई-बहिन के विषय में पूछते हैं और अपने यहाँ के सत्संगों की व्याख्या करूँ। मैं ऐसा इसलिये करता हूँ कि मैं आपके आध्यात्मिक विकास की जिम्मेदारी

को पूरा कर सकूं । रूहानियत में सबसे अच्छा मार्गदर्शन वही होता है जो गुरू के व्यक्तिगत व्यावहारिक अनुभव पर आधारित होता है । रूहासी मार्गदर्शन केवल किताबी ज्ञान पर ही आधारित नहीं होना चाहिये ।

दौरे के सम्बन्ध में मैं आपको बताना चाहता हूँ कि २६ अगस्त को मैं श्री अजीतकुमार और उनके परिवार का मिलने के लिये मिनिआपलस मिनसोता गया, क्योंकि श्री अजीत कुमार और उनका परिवार उनके मित्र श्री चारी की लड़की के विवाह पर मिनिआपलस नगर में गये हुये थे । इस भारतीय बच्ची का विवाह एक अमरीकी नवयुवक से हुआ । यह विवाह का उत्सव अन्तर्राष्ट्रीय विवाह का एक नमूना था, जिसमें सनातन धर्म तथा ईसाई धर्म की संस्कृतियों का मेल हुआ । बधु की ओर से एक सनातनी पुरोहित के द्वारा वैदिक रीति से सप्तपदी की गई और वर की ओर से एक ईसाई पादरी द्वारा ईसाई रीति से विवाह सम्पन्न हुआ । मुझे यह तसल्ली होती है कि विदेश में रहने वाली भारतीय मानवता की मिसाल कायम कर रहे हैं और जाति, धर्म, सम्प्रदाय तथा राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर अन्तरधार्मिक, अन्तर साम्प्रदायिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय विवाह सम्पन्न कर रहे हैं । मैं चाहता हूँ कि यह जोड़ा अजीत कुमार के सुपुत्र अजय तथा उनकी पत्नी दाली की भाँति सुखमय, प्रेमयुक्त और समन्वित जीवन व्यतीत करके एक आदर्श मिसाल कायम करें । इस विवाह के पश्चात श्री अजीतसिंह और उनकी पत्नी मुझे अपने घर विस्काऊंसन ले गये ।

पहले हम उनके घर पार्क फाल्ज विसकाउन्सन में गये

जहाँ श्री अजीत कुमार एक कागज की कम्पनी में उप प्रधान के पद पर नियुक्त हैं और जहाँ पर एक कुटिया रूपी झील के किनारे पर बने हुये मकान में रहते हैं। इस झील में अजीत कुमार की चप्पू से चलाने वाली किश्ती भी है। मकान के सामने खुला स्थान है, हरा-भरा मैदान है तथा घने वृक्ष हैं। मैं इस मकान से प्रातः और सायं मीलों तक घूमने जाया करता था। हम वहाँ दो दिन रहे और उसक बाद श्री अजीत कुमार के ग्रीनबे वाले मकान पर चले गये। जब भी मैं ग्रीनबे जाता हूँ तो अजीतकुमार के परिवार के सभी लोग वहाँ पहुँच जाते हैं। इस बार भी ऐसा ही हुआ। उनके घर बहुत सत्संग आयोजित हुए। हर बार की तरह सैर करते हुए मेरा अजीत कुमार का वार्तालाप ऐसे सत्संगों में बदल जाता था कि हमारी समाधि लग जाती था। मैं ये चाहता हूँ कि चलते समय यदि इन सत्संगों को रिकार्ड करके मानव मन्दिर में प्रकाशित करा दिया जाये तो आप सबको लाभ होगा।

यद्यपि इस बार मेरा वहाँ रहना कम समय के लिये था तथापि कुछ सत्संगी मिलने के लिये आये। उनसे बात करते करते सत्संग हो जाया करता था।

३१ अगस्त को मैं शिकांगो हवाई अड्डे से ११ बजे प्रातः सौनकैंसिमो कैलिफोर्निता के लिये रवाना हो गया। शिकागो क श्री रमेश गोतल तथा श्री गुरुचरन, जिसे मैं प्रायः चरणजीत कह देता हूँ हवाई अड्डे पर मुझे मिलने आये। मैं उसी दिन सायंकाल सैनफ्रैन्सिरिफो पहुंच गया, जहाँ पर श्री पामस भही श्री जाहन रीडन और उनकी पत्नी मेरियन स्वागत के लिये मौजूद थे। जाहन और मेरियन एक श्रद्धालु जोड़ा है जो कि

पांच सौ मील से आकर मुझे सैनफ्रैन्सिको में मिलने आता है।

हम पहले सैनफ्रैन्सिको में श्री चरणजीत सोंधू के घर गये क्योंकि वहाँ पर मेरा एक सत्संग आयोजित था। सत्संग के बाद मैं श्री पायस भट्टी के साथ उनके घर सेक्रामेण्टा में गया और वहाँ रहा। श्री भट्टी की माता जी भी भारत से उनके पास आई हुई थी।

श्री माईक मोहरिक जो बहुत ही श्रद्धालु सत्संगी हैं वे नवाडा से श्री भट्टी के घर पर आये। उनके रूहानी प्रश्नों से जो वार्तालाप हुआ वह एक रोचक सत्संग में बदल गया। श्री माईक मोहरिक का प्रेम और उनकी प्रेममयी किरणों से भट्टी का घर पवित्र हो गया श्री माईक मोहरिक हर साल मानवता मन्दिर को काफी धन देकर सहायता देते हैं। इस बार उन्होंने जयपुर के मानवताकेन्द्र के लिये १६०००) (सोलह हजार) की धनराशि का अनुदान दिया है।

दोपहर के भोजन के बाद माईक मोहरिक अपने घर की ओर रवाना हो गये और श्री पामस भट्टी अपनी पूज्या माता के साथ सैनोजे शहर में विनोद तथा उनकी पत्नी कुसुम शर्मा के घर ले गये। यह दोनों पति-पत्नी तथा उनकी सुपुत्री कु० भोमिका बहुत ही श्रद्धालु सत्संगी हैं।

सायंकाल चार बजे के लगभग हम सुधीर भटनागर के घर पहुंचे क्योंकि वहाँ पर उसी दिन एक सत्संग आयोजित था। मैं आपको यह बताना भूल गया हूँ जान रीडन और उनकी पत्नी मेरीअन ३१ अगस्त की रात को विनोद शर्मा के घर रहे थे। उन्हें शर्मा परिवार का आतिथ्य बहुत ही अच्छा लगा

और उन्होंने शर्मा परिवार की बहुत प्रशंसा की।

एक घटना जिसका उल्लेख मैंने ऊपर वर्णन नहीं किया है वह मेरे प्यारे भारतीय सत्संगियों के लिये विशेष महत्व रखती है वह घटना आपको बता रहा हूँ : पश्चिम में तकनीकी पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी है। इसके कारण मनुष्य के दैनिक जीवन में बहुत सुख सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं। यदि भारत में तकनीकी प्रगति हो रही है,तथापि कुछ वैज्ञानिक सुविधाऐं साधारण जनता को प्राप्त नहीं है। उदाहरण के तौर पर एक सामान्य व्यक्ति अमेरिका में अपनी निजी कार अथवा हवाई जहाज में ऐसा टेलीफोन लगा सकता है जिससे वह देश विदेश में कहीं भी बात कर सकता है। जब श्री भट्टी मुझे सौनेवे की की तरफ अपनी कार में ले जा रहे थे तो उन्होंने विनोद शर्मा से रास्ता पूछने के लिये कार में लगे टेलीफोन से बात-चीत की और एटलान्स जार्जिया जो वहां से लगभग २५०० मील दूर था। मेरे लड़के प्रियदर्शी के घर पर टेलीफोन मिलाया। आधे मिनट के अन्दर ६५ मील की रफ्तार से चलती हुई गाड़ी से भाग्य माता जी तथा के० पी० वर्मा से बात की। इधर मोटर कार की रफ्तार और उधर बहुत स्पष्ट बातचीत एक निराला अनुभव था। मैंने आपको बताया है कि ऐसी सुविधाऐं भारत में उपलब्ध नहीं है। उसका मुख्य कारण ये है कि स्वतन्त्रता प्राप्त होने क बाद भी जो सुविधाऐं हमें विदेशी सरकार द्वारा प्राप्त नहीं थी वे हमारी अपनी सरकार ने भी हमें आज तक नहीं दी। हमने स्वतन्त्रता का वास्तविक स्वरूप नहीं पहचाना मैं स्वयं स्वतन्त्रता सेनानी रहा हूँ किन्तु आजादी प्राप्त होने के बाद पं० जवाहर लाल नेहरू के कहने के बावजूद भी मैंने

राजनीति में भाग नहीं लिया, क्योंकि मैंने ये निश्चय किया था कि स्वतन्त्र भारत की सेवा में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में करूँगा और मैं अपने निश्चय पर दृढ़ रहा।

मैंने पहले भी कई बार कहा है कि एक सन्त तब तक सच्चा सन्त नहीं है और मानव तब तक सच्चा मानव नहीं है जब तक कि वह अपनी उस मातृभूमि के कल्याण के प्रति तटस्थ है, जिसकी मिट्टी से उसका शरीर बना है। मैं यह आशा करता हूँ कि भारत के नागरिक जिन्होंने बार-बार अयोग्य सरकार को बदलकर, देशभक्ति का सबूत पेश किया है और संसार को बता दिया है कि वे मतदान में देशभक्ति से प्रभावित रहते हैं वे हमेशा देश की भलाई को सब से ऊँचा मानते रहेंगे। मैं आशा रखता हूँ कि हमारे देश के राजनीतिज्ञ अपनी विचारधारा और दलनीति से ऊपर उठकर आपस के मतभेदों को समाप्त करके, विज्ञान तकनीकी उन्नति और स्पर्द्धा के युग में मातृभूमि के कल्याण को सर्वोच्च मानते हुए देशभक्ति का परिचय देंगे। हमें इस समय बहुत पवित्र सच्चा जनता-जनार्दन से परिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, जिसमें हमारे राष्ट्र की उन्नति परम लक्ष्य स्वीकार किया जाए। इस आदर्श को अपनाकर हम भारत में एक ऐसा प्रजातन्त्र स्थापित कर सकते हैं जो कि दूसरे देशों के लिये मार्ग दर्शन करें।

मैं इस मासिक सन्देश में कहीं से कहीं चला गया। हमारी समस्याओं का मुख्य कारण यह है कि अहंकार हर क्षेत्र में बाधा डाल रहा है। जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है उसे भगवान कृष्ण ने निष्काम कर्म के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा है कि

"यदि हम बिना किसी स्वार्थ और अहंकार के कार्य हैं तो हम पूर्णता को प्राप्त कर सकते हैं।" उन लोगों के लिये एक स्थान पर बैठकर घण्टों तक समाधि लगाने की आवश्यकता नहीं जो सच्चाई और ईमानदारी से अपना कर्त्तव्य निभा रहे है। आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने के लिये सन्यास योग के द्वारा सभी वासनाओं को त्यागना पड़ता है जिससे कि साधक समाज और सम्प्रदाय से ऊपर उठ कर शिव संकल्प द्वारा मन की एकाग्रता को प्राप्त करे। यह विधि धीरे-धीरे जगत से अलग होने की अर्थात वैरण्य की विधि है जिसे साँख्य योग भी कहा जाता है। किन्तु योग की विधि 'वैरण्य' भी नहीं, अपितु अनुराग की है, जिसे कर्म योग भी कहा जाता है। इस योग के द्वारा व्यक्ति अपने व्यवसाय और कर्तव्य में इतना कुशलतापूर्ण व्यस्त हो जाता है कि व्यक्ति का मन एकाग्र हो जाय।

इसलिये ही भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि 'कर्म की कुशलता ही योग है।" राधास्वामी मत इस सच्चाई को एक नये ढंग से प्रस्तुत करता है. 'सद्गुरु के प्रेम में रत हो जाना योग की पराकाष्ठा है।' मैं इस योग की व्याख्या आगे के किसी मासिक सन्देश में करूँगा। ऊपर दिये गये विवेचन में आपको सन्त मत की दृष्टि से कर्म के महत्व को बता दिया है।

विदेशी यात्रा की सूचना देते हुये मैंने आपको यह बताया था कि पहली सितम्बर १९८९ को श्री सुधीर भटनागर के घर पर सत्संग हुआ। इस सत्संग में भारतीय सत्संगियों के अलावा अमेरिकन सत्संगी भी थे जिनमें जान रीडन तथा

उनकी पत्नी मेरियन मुख्य थे।

दो सितम्बर के मुझे प्रातःकाल सनोजे से हवाई जहाज से लासएन्जलस जाना था परन्तु प्रेम से भरपूर जाह्न तथा मेरियन अपनी वैन में बिठा कर लासएन्जलस के लिये पहली सितम्बर की रात को ही रवाना हो गये। वह इस श्रद्धालु दम्पत्ति की श्रद्धा तथा प्यार का ठिकाना नहीं। जब तक मैं कैलिफोनिया में रहा वे मेरे साथ रहे। मै दो सितम्बर को प्रातःकाल ६।। बजे सेनोजे हवाई अड्डे से उसी दिन प्रातः काल ७।। बजे लासएन्जलस पहुँच गया।

इस मासिक सन्देश को मैं यहीं समाप्त कर रहा हूँ। सितम्बर और अक्टूबर के शेष दौरे की सूचना अगले महीने भेजी जायेगी। मुझे आशा है कि आप इस संक्षिप्त संदेश को ध्यान से पढ़ेंगे और लाभ उठावेंगे।

मैं आप सबको इस महीने की सद्भावना, नव वर्ष की शुभकामना तथा आशीर्वाद भेजता हूं। मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि यह नया वर्ष आपके लिये सुखमय, समृद्धिशाली आन्नददायक तथा शान्तिप्रद रहे।

सब को राधास्वामी !

आपका
फक़ीर मय
मानव

—:०:—

गताँक से आगे (राधास्वामी योग)

सत्तरहवां वचन

हिंसा से अभिप्राय

हिंसा से अभिप्राय केवल किसी के दिल दुखाने से है और उसकी हजारों किस्में हैं। तफसील में पड़ना व्यर्थ विषय को बढ़ाना है। हम यहाँ केवल तीन प्रकार की हिंसा का हीं वर्णन न पर्याप्त समझते हैं। वह यह है :

मन को रोक रक्खो कि उसके अन्दर किसी के हृदय के दुखाने के ख्याल तक न आने पावें। जिव्हा को रोक रक्खो कि वह किसी के सम्बन्ध में बुराई के के शब्द न निकाले। शरीर को सयम में रखो कि वह किसी को हाथ, पाँव या अन्य अंगों से हानि पहुंचाकर दिल न दुखाने पावे। केवल इतना ही करो और तुम हमारा अभिप्राय समझ सकोगे।

हृदय ईश्वर का निवास स्थान है। जैसा तुम्हारा हृदय वैसा ही दूसरों का हृदय। जो व्यक्ति दूसरों का दिल दुखाता है वह ईश्वर के मन्दिर को ढाने वाला है। जो दूसरे के हृदय को पीड़ा पहुंचाता है, वह न केवल दूसरे के हृदय के मन्दिर को अपवित्र और ऊजड़ करने का उपाय करता है, किन्तु असली बात तो यूं हैं कि, वह अपने ही दिल के ईश्वर के मन्दिर को अपवित्र और ऊजड़ कर रहा है।

जो व्यक्ति इस बात को अच्छी तरह समझ लेगा,वह कभी किसी छोटे से छोटे और बड़े से बड़े आदमी के पीछे न पड़ेगा मनुष्य ही पर क्या निर्भर है वह किसी जीव या अचेतन्य को भी दुख न देगा। इससे उसे लाभ ही क्या होगा ?

मन, वाणी और शरीर को शिष्टाचार की दृष्टि से स्व-, भाव की दृष्टि से और सिद्धान्तों की दृष्टि से अधिकार में लाना अत्यन्त आवश्यक बात है। यही तीन बुराई के हथियार

हैं। यही तीन भलाई के यन्त्र है। इन्हीं के व्यवहार से मनष्य शुभ कर्म करने वाला होता है और इन्हीं के व्यवहार से अशुभ कर्म करने वाला बन सकता हैं। किसी को कुछ न दो और न किसी से कुछ लो। इतना तो हो सकता है कि उससे सम्बन्ध न रक्खो, जैसा कि सोलहवें वचन में सकेत किया गया है।

अशुभ कामना मन का पाप है। दुर्वचन जिव्हा का पाप है। अशुभ कर्म शरीर का पाप है। ये अत्यन्त संक्षिप्त मगर अर्थपूर्ण वाक्य है। तुमको अधिकार है कि अपनीदृष्टि से अपने लिये इनकी सूची बना लो। बुद्धिमान के समझाने के लिये केवल एक संकेत पर्याप्त है और मूर्ख को समझाने के लिये ग्रन्थ के ग्रन्थ और वर्षों की संगत भी अपर्याप्त है।

डाह, ईर्ष्या, द्वेष आदि हृदय के पाप हैं। कठोर वचन, दुर्वचन और असया (पीठ पीछे बुराई) वाणी के पाप हैं। काम-भोग, हत्या, मारपीट आदि शरीर के पाप हैं। जितनी मद्दें तुम नियत करोगे वह सब इन्हीं की सूची में आ जायेंगी इन्हें समझ लो और तुम हमारे प्रयोजन को भली प्रकार जान जाओगे।

—:०:—

अठारहवां वचन

प्रश्नोत्तर

प्रश्न है कि हम हिंसा क्यों न करें? यदि हम उसकी सहायता से अपना काम कर सकते हैं, धार्मिक विचारों को फैला सकते हैं तो उससे अलग क्यों रहें? यदि हिंसा करने से हमारा लाभ होता है तो हम क्यों इस लाभ से बंचित रहें।

इन बातों का उत्तर तो दे दिया गया है मगर इनकी व्याख्या कुछ न कुछ इस जगह कर देनी आवश्यक है ताकि कोई व्यक्ति भ्रम में न पड़ें और भ्रम से हानि न हो।

पहली बात तो यह है कि हिंसा से किसी का काम नहीं बनता। यदि प्रारम्भ में काम बनने की आशा हो तो अन्त में वह असफलता का भय उत्पन्न करती है। हिंसा धार्मिक विचारों के प्रचार का साधन नहीं हो सकती क्योंकि हिंसा में आकर्षण नहीं है। वह हिंसक को भय का कारण बना देती है और लोग उससे घृणा करने लगते हैं। हिंसा से कोई भी लाभ नहीं है बल्कि यह प्रत्यक्ष रूप से हानिकर आदत है।

हमारी बातों को ध्यान से सुनते चलो। क्या आश्चर्य कि तुम इनको ठीक और सच्ची स्वीकार करने लगो।

मनुष्य पहले अन्न और जल का भण्डार अपने घर में भर लेता है, तब वह दूसरों को अन्न-जल देता है। जिसका घर आप ही खाली है वह किसी को क्या देगा ?

मनुष्य पहिले अपने हृदय को बुराई से भर लेता है और स्वयं ही बुरा बन जाता है तब वह दूसरों की बुराई करने लगता है। यदि वह स्वयं बुरा न हो तो अपनी बुराई दूसरों को कैसे देगा। बुरे ही से बुराई और भले से भलाई प्रकट होती है। बुरा बुराई करता है क्योंकि उसके अन्दर पहिले बुराई का ढेर लग जाता है। भला भलाई करता है क्योंकि भलाई उसके हृदय में जम गयी है। जो जैसा बन लेता है तब उससे उसी प्रकार का व्यवहार होने लगता है। वह जैसा है वैसा ही तो करेगा।

तुम भले बनना चाहते हो या बुरे ? इसे निश्चय कर लो तब आगे बढ़ो।

इसके अतिरिक्त तुम ईश्वर या ब्रह्म को भला समझते हो या बुरा ? यदि यह भले है तो इनकी निकटता तुमको भले बनने से प्राप्त होगी या बुरे बनने से ? इसे समझ लो तब और प्रश्न करो ।

तुम दुनियाँ से अलग हो या दुनियाँ से मिले-जुले हो ? यदि अलग हो तब तो कुछ कहना सुनना नहीं है । जो जी में आये करो । यदि दुनियाँ में मिले जुले हो तब तो लाजिमी शर्त है कि जिससे दुनियाँ का भला हो वैसा काम करो । इसे भी सोच विचार करके भली प्रकार जान लो तब वाद-विवाद के अखाड़े में उतरो ।

भला बनना और बराई से दूर रहना सन्त मत की पहली शर्त है । इस शर्त के बिना पूरे किये तुम राधास्वामी मत में शामिल होने का संकल्प न करो वर्ना तुम्हें कोइ लाभ नहीं होगा । यह शुद्ध रूहानी (अध्यात्म) मार्ग है । कुदृष्टा, अहित चिन्तन करने वाला और कुकर्मी को इस मार्ग में शामिल होने पर भी जब तक कि वह पहिली शर्त को पूरा न कर ले । यह मार्ग उसे आध्यात्मिक (रूहानी) न बना सकेगा यह स्पष्ट शुद्ध और भ्रम रहित वाक्य है ।

भला भलों की संगत ग्रहण करता है । बुरा बुरों का साथी होता है जो बुरा है वह इश्वर या ब्रह्म का उपासक कैसे होने लगा । सम्बंधी सम्बंधियों में ही जाते हैं । दूसरे लोग वहाँ कब जाने लगे ।

दुनियाँ एक है और तुम उसके एक पुर्जे की हैसियत रखते हो । यदि किसी कल का एक पुर्जा भी खराब रहेगा तो वह निरर्थक बना रहेगा । शरीर का एक अंग भी यदि कष्ट में है तो समस्त शरीर दर्द से कराहता रहेगा । दुनियाँ शरीर ही तो है जिसमें तुम्हारे जैसे असंख्य अंग हैं । तुम्हारे शरीर का

कोई अंग अपने को दोषयुक्त और घायल बनाकर प्रसन्न कैसे रह सकता है। यह असंभव है। दुनियाँ तो दुनियाँ है। तुमको इस दुनियाँ में अपनी हैसियत समझकर काम करने की आवश्यकता है।

दूसरों को प्रसन्न रक्खो और तुम्हें प्रसन्नता प्राप्त होगी। दूसरों को सन्तुष्ट करो और तुम सन्तुष्ट होते चलोगे। दूसरों की भावनाओं को सुन्दर बनाने की व्यवस्था करो और तुम्हारी भावनाओं में सुन्दरता आयेगी। इसके प्रतिकूल दूसरों को दुखी करने से दुख, दूसरों की लूट खसोट करने से लुटना और दूसरों की भावनायें बुरी बनाते रहने से तुम्हारी भावनायें बुरी बनती जायेंगी। अभी सम्भव है कि तुम इन बातों को अच्छी तरह न समझ सको, लेकिन यदि संगत में बैठते उठते रहोगे तो इन शब्दों में से एक-एक को सच्चा मानने लगोगे।

अब कहो कि हिंसा से लाभ होता है या हानि ?

—:o:—

उन्नीसवाँ वचन

निन्दा (असूया) के विषय में एक उदाहरण

किसी जगह एक सीधा सादा साधू रहता था। वह अपने सत्संग द्वारा उस स्थान के लोगों को लाभ पहुचाया करता था 'ऊधो से लेना न माधो स देना' उसके जीवन का नियम था। सबसे मिलकर उसने निष्काम ढंग पर आत्मिक शिक्षा का सिलसिला प्रचलित कर रक्खा था और लोग उससे लाभान्वित हुआ करते थे।

संयोगवश वहां एक योगी जी पधारे, जो अपनी सिद्धताई और चमत्कारों की डींगें मारा करते थे और अपने आप को

उस समय का गुरू सिद्ध किया करते थे। दुनियाँ बावली है लोग चमत्कारों के ग्राहक हैं। यह नहीं समझते कि चमत्कारों की स्थिति क्या है ? चमत्कारों को पूजा करना मूर्खो का स्वभाव है। अधिकतर लोग उस योगी की ओर आकर्षित हुए। उनमें से दो चार को उसने साधक बना लिया और तरह-तरह के लालच देकर उनको अपनी नामबिरी का साधक बना लिया कहावत है कि गुरू नामवरी नहीं चाहते मगर उनके शिष्य नामवर बनाते हैं। यह हर जगह उसकी सिद्धताई के पुल बाँधने लगे और भोले-भाले लोगों को फाँस-फाँस कर उनके जाल में फंसाने लगे। नजर, भेंट और चढ़ावा चढ़ाने लगे। जो व्यक्ति थोड़ सा रुपया लाता योगी जी क्रुद्ध होते। मूर्ख चूंकि उसको सिद्ध समझते थे, डर के मारे उसकी मुट्ठी खूब गरम करने लगे। दुकान चमक उठी। बाजार गर्म हो गया योगी ने बड़ी-बड़ी इमारतें बनवाई और तड़क-भड़क से रहने लगा। दुनियाँ चूंकि इन्हीं बातों पर मरती रहती है। झुन्ड के झुण्ड आदमी उसके पास आने लगे। लोग उस साधु की संगत छोड़ कर उसके विश्वासी हो गये, क्योंकि योगी के शिष्यों की जवान पर हर समय यह शब्द रहते थे कि बस यह योगी ही इस समय का गुरू है। और इस वक्त गुरू के सिवाय दूसरों से अध्यात्म की प्राप्ति की आशा कहाँ हो सकती है। योगी भी अपने पास एक बड़ी संख्या को देखकर दून की हाँकने और डींग मारने लगा। अपवाक्य कहना और पीठ पीछे निन्दा करना तो स्वभाव बन गया। वह इसको अपने व्यापार का प्रबल साधन मान बैठा था। साधू के यहाँ लोग अल्प संख्या में जाने लगे मगर वह ईश्वर भक्त पुरुष था। पहले भी निस्वार्थ और अब भी निस्वार्थ था। वह अपनी बुराई सुनकर हँसता रहता था।

एक दिन योगी महाराज का कोई शिष्य उस साधू के एक विश्वासी से मिला और उससे कहने लगा—तुम बड़ी गलती में पड़ हो।" इसने आश्चर्य में आकर पूछा "मैंने क्या गलती की ?' योगी के शिष्य ने उत्तर दिया—"इससे बुरी और क्या गलती होगी कि तुमने समर्थ के गुरू की संगत धारण नहीं की और ऐसे आदमी से सम्बन्ध पैदा किया है जो बहुत साधारण हैं।" साधू के विश्वा ी ने कहा—"इन शब्दों को थोड़ा स्पष्ट कर दो।" योगी का चेला बोला—'मेरा गुरू जो योगी है चमत्कार वाला है। तुम्हारा साधू अयोग्य है और उसमें कोई तथ्य नहीं है। योगी जी प्रायः कहा करते हैं कि वह अच्छा आदमी नहीं है और मैं ही उस जमाने का पूर्ण गुरू हूँ। तुम उसको छोड़ो और इनकी ओर ध्यान दो। यह मेरा कहने का अभिप्रायः है।

साधू के सत्संगी ने उत्तर दिया—"मैंने तो केवल इस कारण से साधू की संगत धारण कर रक्खी है कि आज तक उसकी जिभ्या से किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में कभी कोई अपशब्द नहीं निकला। यही असली शान्ति का चिन्ह है। मुझे उसकी संगत से शान्ति का चिन्ह है। मुझें उसकी संगत से शान्ति मिलती है। सिवाय इस बात के और किसी बात ी इच्छा नहीं है। मैं उसका प्रेमी हूँ। योगी का शिष्य निरुत्तर हो गया क्योंकि वह जानता था कि योगी के यहाँ दूसरों की बुराई का बाजार गर्म रहता है दुकानदारी जो ठहरी फिर उ ने भी सोच-समझ कर योगी कीसंगत त्याग दी व साधू के यहाँ आने-आने लगा।

पीठ पीछे निन्दा करना बड़ा भारी अपराध है। इस रोग से ईश्वर शत्रुओं को भी मुक्ति दे। "अहिंसा परमो धर्मः।"

इस प्रकार मन,वाणी और शरीर के दूसरों पापों के विषय में भी तुम अपने आप सोच लो। इनसे बचो वरना अध्यात्म के धन से बंचित रहोगे। —:०:—

बीसवाँ वचन

मन की स्थिति

हृदय एक बर्तन है, जिसमें ख्यालात अर्थात संकल्प-विकल्प का पानी मरा हुआ है जिसके जैसे ख्याल हैं, वैसे ही ख्याल वह दूसरों को दिया करता है और उसी प्रकार के ख्याल वह औरों से लेकर भरा करता है। शहद के मटके से शहद दिया जाता है और शहद ही उसमें भरा जाता है। तेल के मटके से तेल दिया जाता है और तेल ही उसमें भरा जाता है। यदि शहद के मटके में तेल और तेल के मटके में शहद भरा जायेसा तो बिगड़ जायेगा। इसलिये जब किसी वस्तु के मटके में दूसरी वस्तु भरनी हो तो पहले उसी खाली करो फिर साफ करो फिर जब भरोगे, उस समय वह वस्तु न बिगड़ेगी।

बुरे दिल से पहले बुराई को निकालो फिर साफ करो। फिर उसमें भलाई को भरो। यदि बिना खाली और साफ किये भरोगे तो भयानक स्थिति हो जायेगी खाली करके फिर साफ करने की भी आवश्यकता है क्योंकि बर्तन ने पहिली वस्तु के प्रभाव को अपना अंग बना रखा है और वह प्रभाव नई वस्तु को बिगाड़े बिना न रहेगा। इस प्रभाव का नाम संस्कार है जब तक संस्कार नहीं बदला जाता, तब तक उच्चतर दशा नहीं होती।

मन को पवित्र करने और उसके प्राचीन संस्कारों को दूर करने का उपाय यह है कि स्वाध्याय से अर्थात् सद्ग्रन्थों के पढ़ने से, शिक्षाओं को सुनने से, सोच विचार करने से और असलियत में मन लगाने से उसमें शुद्धता आती जाती जायेगी।

—(शेष अगले अंक में)—

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार अपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़।
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़ ।
५—सम्पादक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़ ।
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द्र जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है ।

दिनांक १५ नव०, १९८८

सुधा मित्तल

प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. NO L—ALG.28

मिलने का पता :—
'मनुष्य बनो' कार्यालय
शिव भवन, लेखराज नगर,
अलीगढ़—२०२००१ (उ० प्र०)

अवैतनिक सहायक सम्पादक
महेशचन्द्र मित्तल
सम्पादक, व्यवस्थापक व प्रकाशक
श्रीमती सुधा मित्तल

ग्राहक संख्या— 170

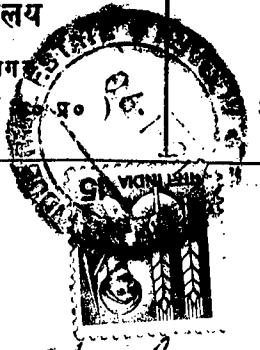

श्रीमान Sri Chilwar Narsimhlu
Book Seller
Vill & PO. Banswada
Nizamabad - AP